(1) Lecture Series No:- 55

Online Class
Date - 09/05/2022,
Day -
Time - 10:00 to 11:40 A.M.
10:50 to 11:40 A.M.

Topic,

(1) The four.

Dr. Sarita Kumari
Department of Philosophy,
B.A Part - II
Paper - (S.)
A.N.D. College Shahpur
Patory, Samastipur,

Ans 1:-

डॉ० राधाकृष्णन जैसे प्रमुख विद्वान के अनुसार वर्ण के अन्तर्गत अनुवांशिक क्षमताओं जन्म का महत्व होते की यह प्रमुख रूप से एक कर्म प्रधान व्यवस्था है।

(i) सामाजिक संघर्षों से छुटकारा: वर्ण व्यवस्था का आधारभूत महत्व इसके द्वारा अनावश्यक प्रतियोगिता पर नियंत्रण रखकर व्यक्तियों को संघर्षों से छुटकारा दिलाना है। यदि प्रत्येक व्यक्ति पद को पाने की आकांक्षा रखने लगे, तब असफलता मिलने पर व्यक्ति का सामाजिक और मानसिक जीवन ही विघटित नहीं

P.T.O.

(2)

होता है, बल्कि इससे समाज के (अन्तर्गत) संगठन के लिए भी खतरा उत्पन्न हो जाता है। वर्ण व्यवस्था में सम्पूर्ण समाज को चार भागों में विभक्त करके प्रत्येक वर्ण के कर्तव्य इस प्रकार निर्धारित कर दिये गये थे और प्रत्येक से आशा की जाती थी कि वह उन नियमों को अपना धर्म या नैतिक कर्तव्य समझकर उनका पालन करेगा। यही वर्ण व्यवस्था या वर्ण धर्म था। जिस प्रकार वर्ण व्यवस्था में व्यक्ति के जीवन के चार विभागों या स्तरों की व्यवस्था की चार वर्णों की भाँति आश्रम भी चार माने गये हैं। इत्यादि

"END"